

बाल साहित्य में नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का महत्व

Ms. Vaishali Shrivastava¹, Ms. Ananya Singhanian²

¹Teacher, Scindia Kanya vidyalaya Gwalior Madhya Pradesh

²Student, Scindia Kanya vidyalaya Gwalior Madhya Pradesh

सारांश

बाल साहित्य बच्चों के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। कहानी, कविता, नाटक, लोककथा और बाल उपन्यास जैसी रचनाएँ बच्चों का मनोरंजन करने के साथ-साथ उन्हें जीवन को समझने का अवसर भी देती हैं। बचपन में पढ़ी और सुनी गई बातें मन पर लंबे समय तक बनी रहती हैं। इसलिए बाल साहित्य में ऐसे विचार और मूल्य होना आवश्यक है, जो बच्चों के व्यक्तित्व को अच्छा बनाने में सहायता करें। प्रस्तुत शोध-पत्र में बाल साहित्य में नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के महत्व को सरल रूप में समझने का प्रयास किया गया है। इसमें सत्य, ईमानदारी, करुणा, सहयोग, अनुशासन, जिम्मेदारी, परिश्रम, प्रकृति-प्रेम तथा दूसरों के प्रति सम्मान जैसे नैतिक मूल्यों पर विचार किया गया है। साथ ही भारतीय संस्कृति, लोकपरंपराओं, त्योहारों, परिवार, भाषा और विविधता से जुड़े सांस्कृतिक मूल्यों की भूमिका को भी देखा गया है। अध्ययन में यह बात सामने आती है कि बच्चों को केवल उपदेश देकर मूल्य नहीं सिखाए जा सकते। कहानी के पात्र, उनकी परिस्थितियाँ, उनके निर्णय और उन निर्णयों के परिणाम बच्चों को स्वयं सोचने और समझने का अवसर देते हैं। आज मोबाइल और डिजिटल माध्यमों के बढ़ते प्रभाव के बीच भी बाल साहित्य की उपयोगिता कम नहीं हुई है। बल्कि सही और गुणवत्तापूर्ण साहित्य की आवश्यकता पहले से अधिक है। शिक्षक और अभिभावक यदि बच्चों को उनकी उम्र और रुचि के अनुसार साहित्य उपलब्ध कराएँ तथा पढ़ी हुई रचना पर बातचीत करें, तो उसका प्रभाव अधिक गहरा हो सकता है। इस प्रकार बाल साहित्य बच्चों के भाषा-विकास, भावनात्मक विकास, मूल्य-बोध और सांस्कृतिक समझ के विकास में उपयोगी भूमिका निभा सकता है।

Keywords: बाल साहित्य, नैतिक मूल्य, सांस्कृतिक मूल्य, बाल विकास, संस्कार

1. प्रस्तावना

बच्चे किसी भी समाज का भविष्य होते हैं। उनके मन और व्यवहार का निर्माण बचपन से ही शुरू हो जाता है। इस उम्र में वे अपने आसपास की हर बात को बहुत ध्यान से देखते और समझते हैं। परिवार, विद्यालय, मित्र, शिक्षक, प्रकृति और पुस्तकों से उन्हें लगातार कुछ न कुछ सीखने को मिलता है। इन्हीं माध्यमों में बाल साहित्य का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है।

बाल साहित्य बच्चों के लिए लिखा गया वह साहित्य है, जिसे वे अपनी उम्र और समझ के अनुसार पढ़ या सुन सकते हैं। इसमें कहानी, कविता, नाटक, लोककथा, बाल उपन्यास, जीवनी और चित्रकथा जैसी अनेक विधाएँ आती हैं। एक अच्छी बाल रचना बच्चे का मनोरंजन करती है, उसकी कल्पना को बढ़ाती है और साथ ही उसे जीवन की छोटी-छोटी बातों को समझने में मदद करती है।

बचपन में सुनी हुई कहानी कई बार वर्षों तक याद रहती है। इसका कारण यह है कि कहानी केवल जानकारी नहीं देती, बल्कि उसमें पात्र, घटनाएँ और भावनाएँ होती हैं। बच्चा पात्रों के साथ जुड़ता है और उनके सुख-दुख को अपने अनुभव से जोड़ने लगता है। इसलिए बाल साहित्य में नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों का होना बहुत आवश्यक है। नैतिक मूल्य बच्चे को यह समझने में मदद करते हैं कि सच बोलना, ईमानदार रहना, दूसरों की मदद करना और अपनी जिम्मेदारी निभाना क्यों जरूरी है। सांस्कृतिक मूल्य उसे अपनी भाषा, परंपरा, परिवार, लोकजीवन और देश की विविधता से परिचित कराते हैं। दोनों प्रकार के मूल्य मिलकर बच्चे के व्यक्तित्व को संतुलित बनाने में सहायता करते हैं।

2. शोध के उद्देश्य एवं पद्धति

इस शोध का मुख्य उद्देश्य बाल साहित्य में नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों की भूमिका को समझना है। इसके अंतर्गत यह जानने का प्रयास किया गया है कि बच्चों के व्यवहार, सोच और भावनाओं के विकास में बाल साहित्य किस प्रकार सहायक हो सकता है। साथ ही यह भी देखा गया है कि बदलते समय और डिजिटल माध्यमों के बीच बाल साहित्य की उपयोगिता किस रूप में बनी हुई है।

इस शोध के प्रमुख उद्देश्य हैं—बाल साहित्य के स्वरूप और महत्व को समझना, उसमें दिखाई देने वाले नैतिक मूल्यों की पहचान करना, सांस्कृतिक मूल्यों की भूमिका को समझना तथा बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में साहित्य की उपयोगिता पर विचार करना।

प्रस्तुत शोध मुख्य रूप से वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। इसके लिए बाल साहित्य से संबंधित पुस्तकों, कहानियों, लोककथाओं और शिक्षा से जुड़े उपलब्ध दस्तावेजों का अध्ययन किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में मूल्यों और चरित्र निर्माण से संबंधित विचारों को भी ध्यान में रखा गया है। इस शोध का उद्देश्य किसी एक लेखक या पुस्तक का मूल्यांकन करना नहीं है, बल्कि बाल साहित्य की सामान्य भूमिका को समझना है।

3. बाल साहित्य का स्वरूप एवं महत्व

बाल साहित्य का सबसे पहला उद्देश्य बच्चे को अपने साथ जोड़ना है। यदि कहानी बच्चे को अच्छी लगती है, उसके पात्र उसे अपने जैसे लगते हैं और घटनाएँ उसकी दुनिया से जुड़ी होती हैं, तो वह रचना को मन लगाकर पढ़ता या सुनता है। इसी कारण बाल साहित्य की भाषा सरल, सहज और स्वाभाविक होना जरूरी है।

बच्चों को यदि सीधे कहा जाए कि हमेशा सच बोलो, सबकी सहायता करो या बड़ों का सम्मान करो, तो वे कुछ समय के लिए इन बातों को याद कर सकते हैं। लेकिन जब वही बात कहानी के माध्यम से सामने आती है, तो उसका प्रभाव अलग होता है। उदाहरण के लिए, यदि कहानी में कोई बच्चा अपनी गलती छिपाने के बजाय उसे स्वीकार करता है और फिर समस्या का समाधान करता है, तो पाठक बच्चा स्वयं समझ सकता है कि गलती स्वीकार करना अच्छी बात है।

बाल साहित्य का महत्व केवल नैतिक शिक्षा तक सीमित नहीं है। इससे बच्चों की भाषा समृद्ध होती है, कल्पना शक्ति बढ़ती है और वे अपनी भावनाओं को समझना सीखते हैं। कहानी पढ़ते समय बच्चा घटनाओं का क्रम समझता है और पात्रों के व्यवहार के बारे में सोचता है। कविता से भाषा की लय और सौंदर्य का अनुभव होता है। नाटक बच्चों को संवाद और अभिव्यक्ति का अवसर देता है।

भारतीय बाल साहित्य की परंपरा भी बहुत समृद्ध है। पंचतंत्र, हितोपदेश और अनेक लोककथाओं में जीवन की समझ को कहानी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। दादी-नानी की कहानियाँ भी लंबे समय से बच्चों को मनोरंजन के

साथ जीवन के अनुभव देती रही हैं। आधुनिक बाल साहित्य में इन परंपराओं के साथ विज्ञान, पर्यावरण, मित्रता, तकनीक और आज के जीवन की समस्याओं को भी स्थान दिया जा रहा है।

इस प्रकार बाल साहित्य बच्चे को केवल किताब से नहीं जोड़ता, बल्कि उसके आसपास की दुनिया को समझने में भी मदद करता है।

4. बाल साहित्य में नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों की भूमिका

नैतिक मूल्य व्यक्ति के व्यवहार को सही दिशा देने वाले मूल्य हैं। बचपन में सत्य, ईमानदारी, करुणा, सहयोग, अनुशासन, जिम्मेदारी, परिश्रम, क्षमा और दूसरों के प्रति सम्मान जैसे मूल्यों का विकास बहुत महत्वपूर्ण है। बाल साहित्य इन मूल्यों को बच्चों तक सहज रूप में पहुँचाने का अच्छा माध्यम है।

सत्य और ईमानदारी बच्चों के व्यक्तित्व की मजबूत नींव बनाते हैं। ऐसी कहानियाँ जिनमें पात्र कठिन परिस्थिति में भी सच बोलता है, बच्चों को ईमानदारी की महत्ता समझा सकती हैं। इसी तरह किसी कहानी में गलती करने के बाद उसे स्वीकार करने वाला पात्र बच्चे को यह सिखा सकता है कि गलती होना गलत नहीं, लेकिन उससे सीखना जरूरी है।

करुणा और सहानुभूति भी बाल साहित्य के महत्वपूर्ण मूल्य हैं। जब बच्चा किसी कहानी में किसी कमजोर, दुखी या अकेले पात्र की स्थिति को देखता है, तो वह उसकी भावनाओं को समझने का प्रयास करता है। इससे उसके भीतर दूसरों के प्रति संवेदनशीलता विकसित हो सकती है। पशु-पक्षियों और प्रकृति से जुड़ी कहानियाँ भी बच्चों में दया और प्रेम की भावना पैदा कर सकती हैं।

सहयोग और जिम्मेदारी के मूल्य भी बच्चों के दैनिक जीवन में बहुत काम आते हैं। ऐसी कहानियाँ जिनमें पात्र मिलकर किसी समस्या का समाधान करते हैं, बच्चों को यह समझाती हैं कि हर काम अकेले करना जरूरी नहीं है। परिवार और विद्यालय में अपनी छोटी-छोटी जिम्मेदारियाँ निभाने की आदत भी इसी प्रकार विकसित होती है।

सांस्कृतिक मूल्य बच्चे को अपनी जड़ों से जोड़ते हैं। भारत की संस्कृति में अनेक भाषाएँ, लोककथाएँ, लोकगीत, त्योहार, रीति-रिवाज और जीवन-पद्धतियाँ हैं। बाल साहित्य के माध्यम से बच्चा अलग-अलग प्रदेशों और समुदायों की परंपराओं से परिचित हो सकता है। इससे उसमें अपनी संस्कृति के प्रति सम्मान के साथ दूसरों की संस्कृति के प्रति भी सम्मान की भावना विकसित हो सकती है।

यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि सांस्कृतिक शिक्षा का अर्थ केवल पुरानी परंपराओं को याद करना नहीं है। बच्चों को यह समझना चाहिए कि संस्कृति में समय के साथ बदलाव भी आते हैं। अच्छी परंपराओं को समझना, उनका सम्मान करना और साथ ही समानता तथा आपसी सम्मान की भावना रखना आज के समय में अधिक उपयोगी है।

परिवार भी सांस्कृतिक मूल्यों का महत्वपूर्ण माध्यम है। परिवार से बच्चे भाषा, व्यवहार, त्योहारों और आपसी संबंधों के बारे में सीखते हैं। बाल साहित्य इन अनुभवों को और विस्तार दे सकता है। किसी कहानी में परिवार के सदस्यों का एक-दूसरे का साथ देना बच्चे को रिश्तों की महत्ता समझा सकता है।

इस प्रकार नैतिक और सांस्कृतिक मूल्य बाल साहित्य को केवल मनोरंजन से आगे ले जाते हैं। वे बच्चे के व्यवहार और सोच को धीरे-धीरे प्रभावित कर सकते हैं।

5. बाल विकास और शिक्षा में बाल साहित्य की भूमिका

बाल साहित्य बच्चे के समग्र विकास में उपयोगी हो सकता है। सबसे पहले इसका प्रभाव भाषा पर दिखाई देता है। कहानियाँ पढ़ने से बच्चों को नए शब्द मिलते हैं और उन्हें अपनी बात कहने का आत्मविश्वास मिलता है। कविता

बच्चों में भाषा की लय और ध्वनि के प्रति रुचि पैदा करती है। नियमित पठन से उनकी समझने और लिखने की क्षमता भी बेहतर हो सकती है।

साहित्य भावनात्मक विकास में भी सहायक है। बच्चों के जीवन में डर, खुशी, ईर्ष्या, अकेलापन, असफलता और मित्रता जैसी अनेक भावनाएँ आती हैं। जब वे किसी कहानी के पात्र को ऐसी ही स्थिति से गुजरते देखते हैं, तो उन्हें अपनी भावनाओं को समझने में मदद मिल सकती है। उदाहरण के लिए परीक्षा में असफल होने वाला पात्र बच्चे को यह समझा सकता है कि एक असफलता के बाद फिर से प्रयास किया जा सकता है।

शिक्षक बाल साहित्य को कक्षा में बहुत उपयोगी ढंग से प्रयोग कर सकते हैं। कहानी पढ़ाने के बाद बच्चों से पूछा जा सकता है कि उन्हें कौन-सा पात्र पसंद आया और क्यों। उनसे यह भी पूछा जा सकता है कि यदि वे उस पात्र की जगह होते तो क्या करते। इससे बच्चे केवल कहानी याद नहीं करते, बल्कि अपने विचार भी व्यक्त करते हैं।

अभिभावकों की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। घर में रोज कुछ समय कहानी पढ़ने या सुनने के लिए रखा जा सकता है। बच्चे को उसकी उम्र और रुचि के अनुसार पुस्तक चुनने की थोड़ी स्वतंत्रता दी जानी चाहिए। इससे पढ़ने की आदत बोल नहीं बनेगी और बच्चा पुस्तक से स्वाभाविक रूप से जुड़ सकेगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा के साथ मूल्यों, चरित्र निर्माण और भारतीय संस्कृति से जुड़ाव पर जोर दिया गया है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में भी विद्यार्थियों के चरित्र और मूल्यों के विकास को शिक्षा का महत्वपूर्ण हिस्सा माना गया है। इस दृष्टि से बाल साहित्य विद्यालयी शिक्षा का उपयोगी सहायक माध्यम बन सकता है।

बाल साहित्य में पर्यावरण से जुड़े विषयों को भी स्थान दिया जाना चाहिए। पेड़-पौधे, पानी, पशु-पक्षी और प्रकृति बच्चों के जीवन से जुड़े विषय हैं। इनके माध्यम से बच्चों में प्रकृति के प्रति प्रेम और जिम्मेदारी की भावना विकसित की जा सकती है।

आज डिजिटल माध्यम बच्चों के जीवन का हिस्सा बन चुके हैं। इसलिए बाल साहित्य को भी नए माध्यमों के साथ आगे बढ़ना होगा। ई-पुस्तक, ऑडियो कहानी और डिजिटल कहानी जैसे माध्यम उपयोगी हो सकते हैं, लेकिन सामग्री का चयन सावधानी से किया जाना चाहिए। बच्चों को ऐसी सामग्री मिलनी चाहिए जो उनकी उम्र के अनुकूल और विश्वसनीय हो।

6. वर्तमान समय में चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ

आज बच्चों के सामने मनोरंजन के बहुत से साधन हैं। मोबाइल, इंटरनेट, वीडियो और खेल उनकी दिनचर्या का हिस्सा बन गए हैं। ऐसे वातावरण में पुस्तक पढ़ने की आदत बनाए रखना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। फिर भी इसका अर्थ यह नहीं है कि बाल साहित्य का महत्व कम हो गया है। बल्कि बच्चों को अच्छी और विश्वसनीय सामग्री देने के लिए बाल साहित्य की आवश्यकता और बढ़ गई है।

बाल साहित्य की एक चुनौती यह भी है कि कई बार रचनाएँ बहुत अधिक उपदेश देने लगती हैं। यदि हर कहानी में केवल यह बताया जाए कि क्या सही है और क्या गलत, तो बच्चा कहानी से जल्दी दूर हो सकता है। आज आवश्यकता ऐसे साहित्य की है जिसमें मूल्य कहानी के भीतर स्वाभाविक रूप से आएँ। पात्र अपने निर्णय लें, कठिनाइयों का सामना करें और उनके परिणामों से पाठक स्वयं कुछ समझें।

सांस्कृतिक विषयों को प्रस्तुत करते समय भी संतुलन आवश्यक है। बच्चों को अपनी संस्कृति से परिचित कराना जरूरी है, लेकिन साथ ही अलग-अलग भाषाओं, क्षेत्रों और समुदायों के प्रति सम्मान की भावना भी विकसित करनी चाहिए। बाल साहित्य बच्चों को जोड़ने वाला होना चाहिए।

आने वाले समय में बाल साहित्य के लिए कई संभावनाएँ भी हैं। विज्ञान, पर्यावरण, तकनीक, खेल, मित्रता, परिवार, लोकजीवन और बच्चों की वास्तविक समस्याओं पर सरल और रोचक रचनाएँ लिखी जा सकती हैं। भारतीय लोककथाओं और परंपराओं को भी नए रूप में बच्चों के सामने रखा जा सकता है।

सबसे जरूरी बात यह है कि बच्चों के लिए लिखा गया साहित्य बच्चों को ध्यान में रखकर लिखा जाए। उनकी भाषा, उनकी जिज्ञासा और उनके अनुभवों को समझना जरूरी है। जब बच्चा किसी कहानी में अपने जीवन की झलक देखता है, तब साहित्य उसके लिए अधिक अर्थपूर्ण बन जाता है।

7. निष्कर्ष

अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बाल साहित्य बच्चों के जीवन में केवल मनोरंजन का साधन नहीं है। यह उनके भाषा-विकास, कल्पना, संवेदना, सोच और व्यक्तित्व निर्माण में उपयोगी भूमिका निभा सकता है। नैतिक मूल्य बच्चों को ईमानदारी, सहयोग, करुणा, अनुशासन और जिम्मेदारी जैसी बातों को समझने में सहायता देते हैं। सांस्कृतिक मूल्य उन्हें अपनी भाषा, परिवार, परंपरा और समाज की विविधता से जोड़ते हैं।

अच्छा बाल साहित्य बच्चों को केवल उपदेश नहीं देता। वह कहानी और पात्रों के माध्यम से उन्हें सोचने का अवसर देता है। यही कारण है कि बाल साहित्य से मिलने वाली सीख कई बार लंबे समय तक मन में बनी रहती है।

वर्तमान समय में डिजिटल माध्यमों के कारण बच्चों की पढ़ने की आदतों में बदलाव आया है, लेकिन अच्छी पुस्तक और अच्छी कहानी का महत्व अभी भी बना हुआ है। जरूरत केवल इस बात की है कि बच्चों को उनकी उम्र और रुचि के अनुसार गुणवत्तापूर्ण साहित्य उपलब्ध कराया जाए।

शिक्षक, अभिभावक और लेखक तीनों की भूमिका इसमें महत्वपूर्ण है। शिक्षक साहित्य को कक्षा में चर्चा और गतिविधि से जोड़ सकते हैं। अभिभावक घर में पढ़ने का वातावरण बना सकते हैं और लेखक बच्चों की वर्तमान दुनिया को समझते हुए सरल और रोचक साहित्य लिख सकते हैं।

अंततः बाल साहित्य को बच्चे के मन में बोए गए छोटे-छोटे विचारों के बीज कहा जा सकता है। इन बीजों से आगे चलकर उसके विचार, व्यवहार और व्यक्तित्व का निर्माण होता है। इसलिए बाल साहित्य में नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों का संतुलित, सहज और स्वाभाविक समावेश बहुत आवश्यक है।

8. संदर्भ सूची

1. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, नई दिल्ली, 2020।
2. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा : स्कूली शिक्षा 2023, नई दिल्ली, 2023।
3. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT), हिंदी एवं बाल-केंद्रित शैक्षिक सामग्री, नई दिल्ली।
4. विष्णु शर्मा, पंचतंत्र, विभिन्न हिंदी संस्करण।
5. नारायण पंडित, हितोपदेश, विभिन्न हिंदी संस्करण।
6. प्रेमचंद, बाल साहित्य से संबंधित चयनित रचनाएँ, विभिन्न संकलन।